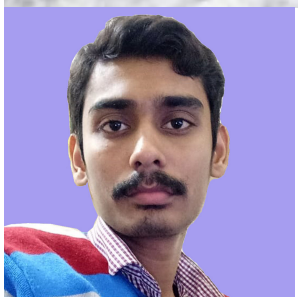

श्री अम्बिकेश कुमार मिश्र

विष्णु : व्यापक वैश्विक स्वरूप

सनातन धर्म केवल आधुनिक भारत का ही नहीं, इसका व्यापक स्वरूप विश्व के अनेक देशों में फैला हुआ है। सनातन परम्परा में उपास्य देव सूर्य तो विश्व तो अनेक प्राचीन संस्कृतियों में परम आराध्य देव रहे हैं। सूर्य के वैश्वित व्यापक स्वरूप पर 'धर्मायण' की अंक संख्या 100 में विवेचना हो चुकी है। यहाँ विष्णु के व्यापक स्वरूप पर विवेचन किया गया है कि भारत एवं दक्षिण एशिया के अनेक देसों में पुरातात्त्विक आधार पर विष्णु की उपासना के प्रमाण मिलते हैं। कंबोडिया, जाबा, बाली आदि देशों में ऐसे अनेक राजा हुए हैं, जिनका राजधर्म सनातन था।

वर्तमान में जब संसार की अधिकांश प्राचीन संस्कृति अपना अस्तित्व खो चुकी है, तब भी भारतीय वैदिक संस्कृति संरक्षित है। इसका मूल कारण है- दूसरे धर्मों की अच्छाई को आत्मसात् करने की इसकी प्रवृत्ति, ईश्वरवाद और आस्तिकता। भारतीय समाज में प्राचीनतम काल में भी देवता लोगों के आराध्य थे, जिसका उदाहरण सैन्धव सभ्यता की मातृदेवी और पशुपति हैं। कुछ भारतीय इतिहासकारों ने तो शैव को दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म माना है। यहाँ आस्था के आधार पर अपने अपने देवता हैं और लोग अपनी मान्यताओं के आधार पर वैष्णव, शैव या शाक्त आदि कहलाते हैं। हिन्दू आख्यानों में त्रिदेव में सबसे अधिक व्यापक और लोकमानस से जुड़े जो देवता हैं वे विष्णु ही हैं। जिन्हें लोगों के पालन का भार मिला है और चूँकि पालक पिता को कहा गया है अतः विष्णु ही सम्पूर्ण चराचर जगत के पिता हैं। तभी तो 18 पुराणों में सबसे अधिक प्रसंग विष्णु का ही आया है।

शिव संहारक हैं, ब्रह्मा हैं निर्माता
जो पाले-पोसे अंग सभी, वो विष्णु विश्व विधाता।

जब कभी जगत् में कोई भी विपत्ति आई विष्णु ने उसका निवारण किया। कभी मत्स्य रूप लेकर तो कभी वाराह, कभी नृसिंह बनकर तो कभी वामन। विष्णु वैदिक देवता हैं, इन्हें वेद में सूर्य भी कहा गया है। वैदिक काल में विष्णु की महत्ता क्या रही होगी इसका अनुमान ऋग्वेद के श्लोक 1.22.20 में कहे गए श्लोक से ही स्पष्ट हो जायेगा।

ॐ तद् विष्णोः परमं पदम् सदा पश्यन्ति सूरयः। (ऋग्वेद1.22.20)

अर्थात् विष्णु सर्वोपरि हैं और सभी देवता सदैव उनके स्थान को देखते हैं। विष्णु का वर्णन ऋग्वेद में किसी निर्बल देवता के रूप में नहीं हुआ है बल्कि वे इन्द्र के सामान ही बलशाली और वीर्यवान् माने गए हैं।

ऋग्वेद के 10.154.02 में कहा गया है-

प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

अर्थात्: भयंकर पर्वत पर रहने वाला (गिरिष्ठाः), स्वतन्त्रता में विचरण करने वाला सिंह(कुचर) जिस प्रकार प्राणियों में अपने पराक्रम के लिए विख्यात है, उसी प्रकार विष्णु भी अपने पराक्रम के कारण ही मनुष्यों में स्तुति के पात्र हैं।

ऋग्वेद के 1.154.4 में कहा गया है कि विष्णु ने अपने तीन डगों में ही समग्र विश्व को माप लिया। आचार्य शाकपूणि के अनुसार(अर्वाचीन संहिताओं में तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में)

सदस्य: रिसर्च विंग, 'सेंटर फॉर स्टडीज ऑफ ट्रेडिशन एंड सिस्टम' (दिल्ली), पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के छात्र, पताः 3728 2nd फ्लोर, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज,दिल्ली-110002

विष्णु के तीन पद का सम्बन्ध जगत् के पृथ्वी, अन्तरिक्ष और आकाश से है। जबकि आचार्य और्णवाभ इसे सूर्य की दैनन्दिनी परिक्रमा के रूप में उदय स्थान, मध्य बिन्दु और अन्त में देखते हैं।

ऋग्वेद का उक्त श्लोक विष्णु को वामन से जोड़ता है-

यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि अक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।

य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा।। (ऋग्वेद 1.154.4)

वेद में विष्णु का सम्बन्ध गायों से भी दिखता है, ऋग्वेद के श्लोक 1.22.18 में कहा गया है "**विष्णुर्गोपा अभादयः**" अर्थात्, विष्णु अजेय गोप हैं। तभी विष्णु का सर्वोच्च पद गोलोक है और वैष्णव धर्म में विष्णु ही कृष्ण हैं।

न केवल वेद, अपितु ब्राह्मण ग्रन्थों में भी विष्णु की महत्ता दृष्टिगोचर होती है, जहाँ इन्हें समस्त देवताओं में श्रेष्ठ माना गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में इन्हें देवताओं में परम कहा गया है।

वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों को छोड़ दें, तो पौराणिक काल में अलग-अलग राजवंशों में विष्णु की उपासना के चिह्न पाए जाते हैं। मौर्य से लेकर गुप्त काल और उसकें बाद के वंशों में इन्हें पूजा जाता रहा है। मौर्य काल मे कृष्ण पूजा को मेगास्थनीज ने भी व्यक्त किया है, जो ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में मकदूनियाई राजदूत था। गुप्त शासक तो स्वयं को परम भागवत सम्बधित करते थे, जो उन्हें विष्णु से जोड़ता है। गुप्त शासकों के अभिलेखों पर प्राप्त विष्णु की स्तुति और गुप्त शासको द्वारा बनाए गए मन्दिर में, विष्णु के मन्दिरों की अधिकांश संख्या इस बात का संकेत है कि विष्णु का गुप्तकालीन समाज में क्या महत्त्व रहा होगा। तब वैष्णव धर्म राजधर्म था।

गुप्तकालीन मन्दिर में विष्णु के कुछ मन्दिर काफी प्रमुख हैं जिनमें है- एरन का वैष्णव-वाराह मन्दिर, तिगवा का मन्दिर, देवलगढ़ का दशावतार मन्दिर आदि प्रमुख है। गुप्तकालीन 426 ई. गंगाधर अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि उस समय देवोत्थान एकादशी का महत्त्व समाज में था। लोगों में तब भी ये विश्वास था कि विष्णु कार्तिक शुक्ल पक्ष को जागते हैं।

गुप्तकाल में न सिर्फ भारत बल्कि भारत के बाहर भी विष्णु की उपासना का चलन था। इतिहास के हुए अध्ययन और श्रीमद्भागवत की मानें तो विष्णु यवनों के भी उपास्य देवता थे।

भागवत स्कन्ध-2 अध्याय चार के श्लोक 18 में इन जातियों का उल्लेख हुआ है, जिन्होंने भगवान् का आश्रय प्राप्त कर लिया था, उनमें से कुछ ये हैं – हूण, किरात, आन्ध्र, पुलिन्द, पुक्कस, आभीर, यवन, खस। विदेशियों के द्वारा वैष्णव धर्म में दीक्षित होने की घटना का पता हमें भारतीय इतिहासों और शिलालेखों से सप्रमाण मिलता है।

इस प्रसंग में परम भागवत हेलियोडोरस नामक यवनदूत का चर्च नितान्त उचित है। द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के बेसनगर अभिलेख से पता चलता है कि वह ग्रीक शासक एंटियालकिडस का दूत बनकर विदिशा-मण्डल के राजा काशीपुत्र भाग्रपद के दरबार में आया था और यहीं उसने विष्णु की पूजा के लिए गरुडध्वज की स्थापना की और खुद को परम भागवत की उपाधि से विभूषित किया। इससे स्पष्ट है कि वह विष्णु की उपासना में सर्वतोभावेन दीक्षित हो गया था। न सिर्फ भारत बल्कि भारत के बाहर भी विदेशियों ने विष्णु को अपना उपास्य बनाया।

हेलियोडोरस का गरुड़-स्तम्भ, विदिशा

भारत के बाहर विष्णु:

1. जावा- जावा में वैष्णव धर्म का इतिहास प्राचीन है। वैसे तो यहाँ तो यहाँ शैव धर्म की प्रधानता व्यापक रूप से विद्यमान थी, लेकिन यह जीवन स्तर पर प्रभाव की दृष्टि से वैष्णव अद्वितीय धर्म था। यहाँ राजवंशों में शैव धर्म की अपेक्षा वैष्णव धर्म के प्रति सम्मान और आदर की भावना अधिक थी। जावा में लक्ष्मी-विष्णु और गरुड़ की मूर्ति बहुत संख्या में पायी जाती है। यहाँ विष्णु के नाना अवतारों की प्रतिमा उपलब्ध होती है। जिनमें राम, कृष्ण, वाराह, नृसिंह मत्स्य अवतार की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेख्य है। विष्णु के आयुधभूत शंख, चक्र, गदा और पद्म का पृथक रूप से अंकन भी वहाँ मिलता है। विष्णु से सम्बन्धत यहाँ का 'लोरा-जोंगरंग' का बृहदाकार मन्दिर महत्त्वपूर्ण है। इसकी रचना नवम शती के समय की है। इस मन्दिर में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों की प्रतिमा अवस्थित है। यहाँ बेल्हन नामक स्थान पर विष्णु की एक उदात्त मूर्ति है जिसमें औदार्य तथा शांतिभाव का अद्भुत मिश्रण है। जावा के सामाजिक जीवन और कला पर वैष्णव धर्म का प्रभाव अभी भी स्पष्ट दिखता है।

2. थाईलैंड- वैसे तो थाईलैंड बौद्धबहुल देश है और यहाँ के लोग बौद्धधर्म को मानते हैं, लेकिन इस देश में भी विष्णुधर्म के प्रति लोगों में श्रद्धा तथा सम्मान कम नहीं है। 1350 में सुवनपूनी के राजा ने अयोध्या नामक नवीन राजधानी की स्थापना की और रामाधिपति नाम से स्वतन्त्र राज्य करने लगा। इस तरह बौद्ध प्रधान देश में राम अज्ञात नहीं रहे।

3. चम्पा- चम्पा के इतिहास में भी विष्णु की महत्ता कम नहीं दिख पड़ती। यहाँ भी विष्णु के अवतारों की मूर्तियाँ दिखाई पड़ती है जिसमें कृष्ण और राम के शौर्यमण्डित चरित्र विशेष रूप से उपलब्ध है। यहाँ विष्णु अनेक नामों से अभिहित किये गए हैं यथा पुरुषोत्तम, नारायण, हरि तथा गोविन्द। विष्णु की शक्ति लक्ष्मी यहाँ पद्मा तथा श्री के नाम से चम्पा की मान्य देवी मानी जाती है। गरुड़ चम्पा का लोकप्रिय पक्षी है, इसकी मूर्ति यहाँ जगह-जगह में पायी जाती है

4. कम्बोडिया- इस देश के महनीय महिपालों ने भगवान् विष्णु के प्रति असीम श्रद्धा तथा अपार भक्ति का प्रदर्शन शिलालेखों और विशालकाय मन्दिर में खूब भली भांति किया है। यहाँ हिन्दू मन्दिर में कभी प्रतिदिन रामायण,महाभारत तथा पुराणों के प्रवचन की व्यवस्था थी। अंकोरवाट का कम्बोज मन्दिर विष्णु के प्रति तत्कालीन सामाज के श्रद्धा का उदाहरण है। यह मन्दिर वैष्णव का संसार में सबसे अद्वितीय मन्दिर है।

अष्टभुज विष्णु की प्रतिमा, अंकोरवाट, कंबोडिया

5. बालिद्वीप- यहाँ आज भी हिन्दू धर्म का उतना ही बोलबाला है जैसा कभी प्राचीन काल में था। पूरे द्वीप में हिन्दू संस्कृति विशुद्ध रूप में आज भी विद्यमान है। बालि में अनेक हिन्दू देवी देवताओं की उपासना प्रचलित है, जिसमें विष्णु की भक्ति विशेष महत्त्व रखती है। यहाँ भगवान् विष्णु की पत्नी लक्ष्मी श्री देवी के नाम से विशेष प्रसिद्ध हैं। श्री देवी धान की देवी हैं इसलिए वह यहाँ श्रीतांडुली भी विख्यात हैं। यहाँ धान की विभिन्न अवस्थाएं हिन्दू देवियों के नाम पर रखी हुई है,यथा- धान के बीज का नाम है- उमादेवी, धान के नवीन पौधे के लिए गिरिनाथ सम्बधन होता है तथा जब धान को एक जगह से उठाकर दूसरे जगह बो दिया जाता है तो इसका नाम गंगीदेवी हो जाता है। बालि निवासियों की यह दृढ विश्वास है कि श्री-देवी का सम्बन्ध धान की उत्पत्ति तथा खेती के साथ मुख्य रूप से है। जिसके लिए उनके मध्य पौराणिक कथा है जिसमे श्रीदेवी का किसी दैत्य द्वारा हरण किये जाने का वृत्तांत है और श्रीदेवी के मृत्यु के उपरान्त उनके नाभिस्थल से धान की उत्पत्ति हुई थी। विष्णु की स्तुति में बालि में दो स्तोत्र प्रसिद्ध हैं- विष्णुपंजर स्तोत्र तथा विष्णुस्तव।

इन देशों के अलावा दक्षिण-पूर्वी एशिया, हिन्दचीन, मलाया, मैक्सिको, रूस, स्पेन, ईराक, वियतनाम इंडोनेशिया और अन्य देशों तक विष्णु उपासना फैली थी। इंडोनेशिया में तो विष्णु की सबसे बड़ी प्रतिमा अवस्थित है, जो करीब 122 फुट ऊँची और 64 फीट चौड़ी है। इस मूर्ति को बनाने में 28 साल लगे थे, जो 2018 में बनकर तैयार हुआ।*

रूस में खुदाई के दौरान आज भी हिन्दू देवताओं की प्रतिमा मिल जाती है। कुछ वर्ष पूर्व ही रूस में वोल्गा प्रान्त के स्ताराया मायना (Staraya Maina) गाँव में विष्णु की प्रतिमा मिली थी जो 7-10 वीं शताब्दी का बताया गया था। इन सब प्राप्त सबूतों से पता चलता है कि हिन्दू सभ्यता की जड़ कितनी गहरी थी।

*इंडोनेशिया निर्मित आधुनिक गरुड़विष्णु प्रतिमा

अध्ययन स्रोत

1.बुंदेलखंड के वैष्णव मन्दिर का सांस्कृतिक अध्ययन, शोध प्रबंध, शोधार्थी-वरुण तिवारी,दयानंद वैदिक विद्यालय, उरई(उ.प्र.)

2. गुप्तकालीन वैष्णव धर्म, शोध प्रबंध, नीता स्टीफन, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी(उ.प्र.)

3. प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक अध्ययन, विद्यालंकार सत्यकेतु,प्रकाशक-श्री सरस्वती सदन,मसूरी।1978

4.भागवत संप्रदाय, बलदेव उपाध्याय; प्रकाशक: नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।1953

5.वैष्णव,शैव और अन्य धार्मिक मत, रामकृष्ण गोपाल भंडारकर, प्रकाशक: भारतीय विद्या प्रकाशन:वाराणसी। 1967

6. https://timesofindia.indiatimes.com/world/rest-of-world/Ancient-Vishnu-idol-found-in-Russian-town/articleshow/1046928.cms.

***